दिल्ली दरबार

20/2/1965, शनिचरवार प्रातः क्लास

रिकार्ड :– छोड़ भी दे आकाश सिंहासन.....

यह गीत बच्चों ने ही बनाया हुआ, बच्चों ने ही सुना। याद करते हैं अपने परमप्रिय, परमपिता (को) कि फिर से यह माया की परछाई पड़ गई है, प्रवेशता हो गई है अथवा रावण का राज्य हो पड़ा है। सभी दुःखी–3 हैं। अपने को कहते हैं कि हम भ्रष्टाचारी हैं, पतित हैं। सब कहते हैं। ज़रूर इस समय 5000 वर्ष पहले (बाप आए थे); क्योंकि बोलते हैं कि कल्प–2 कल्प के संगमयुगे आता हूँ। अभी फिर भी कहते हैं कि देखो, फिर भी कल्प के संगमयुगे आया हुआ हूँ। बाप कहते हैं बच्चे–3। बाप आ करके आथत देते हैं, अभी बेफिकर रहो। ये तो मेरा ही पार्ट है, दुनिया में जो बुलाते हैं कि बाबा आओ, आ करके फिर से राजयोग सिखलाओ और आ करके इस पतित दुनिया को पावन बनाओ वा बाबा आ करके इस नास्तिक, ऑरफन लायक, निधणके (बन गए हैं उनको पावन बनाओ)। ऑरफन कहा जाता है जिनके माँ–बाप न हों। फिर उनका क्या हाल होता है? घर में आपस में लड़ते–झगड़ते रहते हैं। यह तो है बड़ा घर, बेहद का घर। इसमें इस समय में बड़े दुःखी (हैं)। देखो, ये सभी जो अपने को धर्म के बड़े–2 गुरू कहलाने वाले, वो आपस में राय कर रहे हैं कि इस भारत में यह जो अशांति हो गई है लड़ाई, मारा–मारी सिर्फ भारत में ही नहीं है, सारी दुनिया में (है)। तो फिर ज़रूर बच्चों को सुख देने के लिए, इस दुःख से पार करने के लिए वा दुःख मिटाने वा इस रावण के राज्य से (छुड़ाने बाप आते हैं)। इस परछाई को रावण राज्य कहा जाता है, माया का राज्य। इससे छुड़ाने के लिए बोलते हैं कि यह तो मेरा फर्ज है। देखो, गाते हो ना कि फिर से आ करके हमको (पावन बनाओ)। किसको कहा फिर से? यह तो सभी ने बैठ करके बाप को कहा। सबका बाप, वर्ल्ड का फादर वो तो बाप है ना। सभी आत्माओं का एक ही बाप है। सभी कहते हैं– हे बेहद के बाबा! अभी ऊपर से अपना तख्त छोड़ (इस धरती पर आ जाओ)। ब्रह्म महतत्व में रहते हैं ना। ये सभी आत्माएँ ब्रह्म महतत्व में रहती हैं। जैसे यहाँ आकाश तत्व में रहते हैं ना। यह नाटक होता है। यहाँ तो जीवात्माएँ हैं। वो स्थान है आत्माओं का। यह भारत इस समय में नर्क है। नर्क भी कौन–सा? रौरव नर्क। यहाँ एक शास्त्र है गरूड़ पुराण, उनमें ये कथाएँ हैं; परन्तु रौरव नर्क कोई नदी नहीं है। देखो, यह विषय सागर यानी सभी विषय में गोता खाते हैं। इस समय में जो भी मनुष्य मात्र हैं, इस विषय सागर में (गोता खाते हैं)।... दुनिया है, कोई नदी नहीं है। सभी एक/दो को काटते–मारते दुःखी करते ही रहते हैं। बच्चे बाप को, स्त्री पति को, पति स्त्री को, भाई भाई को। देखो, यहाँ कितना दुःख है। बाप आ करके समझाते हैं कि बच्चे, यह सुख और दुःख का ड्रामा बना हुआ है। ऐसे नहीं कि अभी–2 स्वर्ग है, सुख है, अभी–2 नर्क है...या जिसके पास बहुत धन है वो स्वर्ग में हैं....नहीं है सो नहीं हैं। नहीं, सभी धनवान भी दुःखी हैं; क्योंकि दुःख ज़रूर उठाते है। बीमारी आदि है, कोई मरा (तो) रोया, कोई पीटा, कोई ने गोली मारी। तो ये सारे क्वेश्चन हैं कि यह जो सारी दुनिया है, दुःखी है। क्यों दुःखी बनी है? बाप आ करके कहते हैं कि तुम नास्तिक बन गए हो। तुम्हारा जो धनी मात–पिता है, जिसके लिए गाते भी हो– तुम मात–पिता, हम बालक तेरे, तुम्हरी कृपा से सुख घनेरे ; क्योंकि जब फादर है तो मदर भी है ना। बस, सिर्फ गायन में (है) बाकी इनको मालूम नहीं है कि मात–पिता कौन हैं? किसको याद करें? किसको पता भी नहीं है। शिवलिंग के ऊपर जाएँगे (कहेंगे) त्वमेव मातश्च पिता। लक्ष्मी–नारायण के पास जाएँगे (कहेंगे) त्वमेव माताश्च पिता। छोटे बच्चे राधे–कृष्ण के पास जाएँगे तभी भी कहेंगे त्वमेव माताश्च पिता। पीछे पिछाड़ी में बैठ करके त्वमेव माताश्च पिताश्च बंधुश्च सखा (कहते रहते हैं)। तो बरोबर बाप बैठ करके समझाते हैं कि जो भी तुम्हारे लौकिक मात–पिता, भाई, गुरू–गुसाईं वगैरह–2 हैं ये सब निधनके हैं, ऑरफन लायक ; क्योंकि बाप को नहीं जानते और कहते भी आते थे कि शिवबाबा, हम रचता को अर्थात् बाप को,

उसकी रचना को नहीं जानते यानी ये माया का (और) सृष्टि का चक्कर। माया का चक्कर है ना। माया कहा जाता है सिर्फ रावण को। पाँच विकारों रूपी रावण को माया कहा जाता है। धन को सम्पत्ति कहा जाता है। ऐसे नहीं कहना है कि इसके पास बहुत माया है। नहीं, यह तो उनको और ही उल्टा कर दिया है। (कहना चाहिए) उनके पास बहुत सम्पत्ति है। माया है ही रावण। पाँच विकारों को माया कहा जाता है और धन को सम्पत्ति (कहा जाता है)। सम्पत्तिवान भव, आयुष्मान भव, पुत्रवान भव, चिरंजीवी भव, ऐसे कहते हैं ना। ये आशीर्वाद कौन दे सकते हैं? ये तो बाप देंगे ना और सबको देना है ना। कोई गुरू थोड़े ही है जो थोड़े फॉलोअर्स को देगा। नहीं, ऐसा कोई भी गुरू नहीं है; क्योंकि ये जो गुरू हैं ना वो हैं भक्तिमार्ग वाले गुरू। ज्ञान सागर तो एक ही है ना, जिसके लिए देखो गीत कितना अच्छा है, सब गाते रहते हैं। जब भी गीता सुनाते हैं तो गीता सुनाकर झट कह देते हैं श्रीकृष्ण भगवानुवाच। अरे, श्रीकृष्ण को भगवान ! भगवान को, ऊपर वाले को बुलाते हो कि रूप बदलकर आओ। रूप तो हम और तुम, यह जो दादा है, ये सभी बदलते हैं ना। निराकार से यहाँ आ करके साकार बनते हैं। वो जो निराकार से साकार बनते हैं वही कहेंगे ना कि आप भी रूप बदलकर मनुष्य तन में आएँगे ना। कोई बैल के ऊपर तो सवारी नहीं होगा, जैसे चित्रों में लगा दिया है बैल के ऊपर सवारी। बोलते हैं कि तुम कहते हो कि बाबा, आप भी हमारे मुआफिक रूप बदल कर मनुष्य तन में तो आओ ना। तो बाप आ करके फिर समझाते हैं कि मैं कोई बैल में नहीं आता हूँ, न मैं कोई मच्छ–कच्छ (में आता हूँ)। ये हमारी बहुत ही ग्लानि की है। मैं आता ही हूँ मनुष्य तन में। वो मनुष्य कौन है, उनका बैठ करके परिचय देते हैं कि बच्चे, में आता ही हूँ..... क्योंकि पहले–2 तो मनुष्य सृष्टि रची जाती है प्रजापिता ब्रह्मा। ब्रह्मा को ही प्रजापिता कहेंगे। विष्णु को प्रजापिता नहीं कहेंगे। शंकर को प्रजापिता नहीं कहेंगे। तो दो बाप हुआ। एक शिव परमपिता परमात्मा निराकार आत्माओं का, जो कहते रहते हैं– हे बाबा! हे परमपिता परमात्मा! हे अनाथों को सनाथ करने वाले! आओ; परन्तु बच्चों को पता नहीं है। यह तो पुकारते रहते हैं। कब आएगा, कोई पता नहीं है; क्योंकि शास्त्रों में बहुत बातें लगा दी हैं। सतयुग की आयु इतनी है, कलियुग की इतनी आयु है, फलाना लम्बा–चौड़ा (कर दिया है)। तो बिचारा कब समझे कि कब आएगा। तो फिर क्या हुआ ? शास्त्रों में ये जो बैठकर अयथार्थ बातें डाली हैं, उनके कारण भारत घोर अंधियारे में है। तो फिर गाते हैं ज्ञान सूर्य प्रगटा। अब यह तो सूर्य नहीं है ना। यह कोई देवता भी नहीं है।.....गाते हैं सूर्य देवताय नमः, चंद्र देवताय नमः, सितारे देवताय नमः। अब ये देवताएँ थोड़े ही हैं। देवताएँ (तो) देवताएँ हैं। वो तो ब्रह्मा,विष्णु,शंकर को देवताएँ कहते हैं और ये मनुष्य हैं और वो बाप है, जो सबसे ऊँचा है। <u>उनको कहा जाता</u> है ऊँचे ते ऊँचा भगवत्। तो ज़रूर सबको यह जो ड्रामा है जिसको खेल कहा जाता है, यह भी तो समझना चाहिए ना कि इनकी आयु (कितनी है)। खेल समझते हैं; परन्तु हर एक युग को बहुत वर्ष दे दिया है, लाखों। अरे, लाखों वर्ष अगर युग का है तो ख्याल तो करो कि इस समय में कितने मनुष्य होते। द्वापर के इतने लाख, फिर उतने मनुष्य आएँगे ना। त्रेता में इतने लाख, द्वापर में इतने। कलहयुग अभी 40 हज़ार वर्ष, पता नहीं कोई 4 लाख कहते हैं। अरे, मनुष्य थोड़े (हैं), अभी रहने की जगह नहीं है, खाने के लिए नहीं है, भीख माँग रहे हैं। भीख माँगेंगे ना। जो ऑरफन्स (हैं), जिनका धनी–धोरी न होगा वो क्या करेंगे! तो यह खेल बना हुआ है भारत के ऊपर। भारत सनाथ, भारत अनाथ। भारत पावन, भारत पतित। भारत सॉलवेंट, देवी–देवता, पवित्र फिर भारत अपवित्र। भारत में राजाओं के राजा (होते हैं)। कोई और खण्ड में नहीं होते हैं, जो पतित राजाएँ पावन राजाओं के चित्रों को बैठ करके नमस्ते या मंदिर बनावें। नहीं, यह भारत में ही है। तभी बाप कहते हैं मैं तुझे अभी राजाओं का राजा (बनाता हूँ), न पतित राजा, (बल्कि) पतितों का भी जो फिर राजा है, जिनको ये नमन करते हैं, मैं तुमको वो देवता बनाता हूँ। सुन्दर

बना करके....। वो है पतित, वो है पावन। देखो, यह भारत ही है, जिसमें पावन डिनायस्टी सूर्यवंशी–चंद्रवंशी, फिर पतित डिनायस्टी द्वापर वैश्यवंशी और शूद्रवंशी (होती है)। तो यह भारत के ऊपर है ना। ये कोई उनकी बातें थोड़े ही हैं। वो तो बाईप्लाट है, वो पीछे आते हैं। वो हर एक अपने धर्म को जानते हैं। हर एक अपने धर्म के धर्म स्थापक को जानते हैं। एक भारत ही है जो अपने धर्म और धर्म के स्थापक को नहीं जानते हैं। कौन–सा धर्म स्थापन किया, उस धर्म की रस्म–रिवाज़ क्या थी, कैसे श्रेष्ठ थे (नहीं जानते हैं)। धर्म श्रेष्ठ यानी सबसे ऊँचा धर्म, पहला नं.वन। ये तो पीछे बिरादरियाँ हैं ना मल्टीप्लीकेशन। कहा भी जाता है कि दैवी धर्म श्रेष्ठ था। दैवी कर्म श्रेष्ठ थे। कोई भी भ्रष्ट कर्म न था। वहाँ भ्रष्टाचारी होते ही नहीं थे। तो देखो, वही धर्म श्रेष्ठ, कर्म श्रेष्ठ देवी–देवताएँ फिर आ करके भारत में हैं ना। ये धर्म भ्रष्ट, पता नहीं (है) कि हमारा धर्म कौन–सा है। हिन्दू धर्म (कह देते हैं)। अरे, हिन्दू तो हिन्दुस्तान का नाम है ना। वो कोई धर्म थोड़े ही होता है। यूरोप में रहने वाले कहेंगे यूरोपियन धर्म....। धर्म तो धर्म स्थापन करने वाले होते हैं और हर एक धर्म का एक शास्त्र (होता है)। उसको कहा जाता है धर्म शास्त्र। तो बाप समझाते हैं कि बच्चे, पता है कि यहाँ कौन–से धर्म मुख्य हैं? एक डीटीज़्म, फिर इस्लामिज़्म, फिर बौद्धिज़्म, फिर क्रिश्चिनिज़्म। बस, चार मुख्य धर्म हैं। और तो कोई धर्म वास्तव में (हैं नहीं)। पीछे हैं छोटे–2। उसमें सबसे पहले कौन–सा? डीटीज़्म सतयुग का। तो ज़रूर सतयुग स्थापन करने का कर्तव्य तो बाप करेगा ना। हेविनली गॉड फादर। तुम बच्चों को बैठकर समझाते हैं कि कल्प–2 जब संगमयुग आता है (तब मैं आता हूँ)। मैं युगे–2 नहीं आता हूँ, कल्प के एक ही संगमयुगे आता हूँ। ...बच्चे और बच्चियाँ जानते हो कि अभी हम सनाथ बन रहे हैं। हमारा अनाथों का नाथ, सनाथ बनाने वाला बेहद का बाबा कोई मनुष्य नहीं (है)। मनुष्य, मनुष्य को अल्पकाल क्षणभंगुर सुख दे सकते हैं। पीछे बाप,टीचर,गुरू जो भी हो अल्पकाल क्षणभंगुर (सुख देते हैं)। वो सन्यासी कहते हैं कि अल्पकाल क्षणभंगुर कागविष्ठा समान थोड़ा (सुख है)। अभी बच्चे समझते हैं कि क्या सुख है यहाँ! दुःख ही दुःख है, बहुत ही त्राहि–2 है। तो इसको कहा जाता है अल्पकाल क्षणभुंगर। भारत में तो सदा सुख (था)। तो देखो, बच्चों को तीन बातें याद करनी हैं ना। यह भारत बरोबर सुखधाम था, अभी दुःखधाम है और आए थे शांतिधाम में। बाबा अभी क्या कहते हैं? कहते हैं– बच्चे, एक आँख में अपना स्वीट होम रखो यानी शांतिधाम। स्वीट होम कहा जाता है बाबा का घर। एक आँख में लाइट हाउस बनो। लाइट हाउस देखा है? बोट का वो बताते हैं बत्ती फिरती है, देखो एरोप्लेन में बत्ती फिरती है ना तो क्या होता है, अभी ऐसे (ही) तुम्हारी एक आँख में होना चाहिए शांतिधाम और दूसरी आँख में सुखधाम और यह तो दुःखधाम है, इनको थोड़े ही याद करना है। तो हमेशा बुद्धि में यह रखो कि अभी हम जाते हैं शांतिधाम में। नाटक पूरा होता है। 84 का (चक्र) खलास हुआ। पुराना चोला हो गया। पुरानी दुनिया...सब पुराना ही पुराना। रहो भी गृहस्थ व्यवहार में। छोड़कर कहाँ जाकर रहेंगे? वो निवृत्तिमार्ग वाले तो जंगल में जाकर रहते हैं। ये बिचारी मम्माएँ और बच्चियाँ जंगल में जाकर थोड़े ही रहेंगी। तभी बाबा कहते हैं कि गृहस्थ व्यवहार में कमल फूल के समान रहते हुए पवित्र (रहो)। बस, मूल बात है पवित्र। मैं जो तुम्हारा बाप हूँ, आया हूँ फिर पवित्र हैविन स्थापन करने। यहाँ भारत में प्युरिटी थी ना। अभी इम्प्युरिटी है, रावण राज्य है। अभी रावण राज्य ही खलास होता है; क्योंकि आधा कल्प है रावण राज्य, आधा कल्प है रामराज्य। जब वो आते हैं तो पीछे दुःख शुरू होता है, कलाएँ कमती होती जाती हैं। अभी इस समय में तुम ईश्वरीय गोद में हो। यह जैसे ईश्वरीय फैमिली है (यानी) कुटुम्ब (है)। सन्यासियों में तो यह बात नहीं हो सकती है ना। दादा, फिर बाबा, क्या अर्थ करते हो? अच्छा, दादा तो हो गया शिवबाबा, फिर प्रजापिता ब्रह्मा बाबा। लौकिक भी बाबा। बाबा ने समझाया है ना कि इस समय में तुमको तीन बाप हैं। कोई दूसरे को नहीं। दूसरे जानते नहीं हैं। तुमको तीन

(हैं)– एक लौकिक, एक परलौकिक निराकार, फिर प्रजापिता ब्रह्मा। बस, और तो किसका कोई गायन है नहीं। ऐसे और तो हैं, किसको भी कह दो बापू। ये देखो, म्युन्सिपालिटी का यह है फादर ऑफ द कन्ट्री। जो मेयर होते हैं उनको भी फादर (कह देते हैं)। ऐसे तो फादर बहुत होते हैं। कोई भी बुड्ढे को कहेंगे पिताजी। ऐसे कह देंगे। नहीं, यह रियल्टी में (है)। बाप सब मनुष्य मात्र को बैठकर समझाते हैं। यह मनुष्य है ना। तो बाप जो इसमें प्रवेश किया है, रूप बदली किया है, मनुष्य के तन में आया हुआ है, वो बैठ करके बच्चों को समझाते हैं। ....सुनाते भी (और) बात भी आत्माओं से करते हैं। इसको कहा ही जाता है रूहानी सर्जन। रूहों को इंजेक्शन (देने वाला)। वो कहते हैं आत्मा निर्लेप है। अरे, आत्मा निर्लेप कैसे हो सकती है! आत्मा में संस्कार जाते हैं, जिन संस्कारों अनुसार जन्म मिलता है। पीछे आत्मा निर्लेप कैसे रही? तो देखो, यह भी ठीक नहीं है। ये तो बेकायदे समझा देते हैं। वो बाप को भूल जाते हैं, भुलाते हैं, बेमुख करते हैं। तभी बाबा आकर कहते हैं– हे मेरे लाडले बच्चों! अभी तुम जानते हो कि तुमको परमपिता, परमशिक्षक, पतित–पावन....। अब ये जानते हो ना कि परमपिता को भक्तिमार्ग में सभी याद करते हैं। सब भगत–साधु। साधु क्या करते हैं? साधना करते हैं। साधु क्या करते हैं? मण्डलेश्वर क्या करते हैं? वो जाते हैं कुम्भ के मेले में और नदियों के ऊपर स्नान करने, पाप धोने। पतित हैं ना। फिर वो गुरू तो नहीं हो सकते हैं ना; क्योंकि वो खुद ही पतित हैं, जाकर स्नान करते हैं, सभी को कुम्भ के मेले पर ले जाते हैं। कुम्भ के लिए बाप ने समझाया था ना कि वो सागर और नदियों से जो पानी निकलता है वो थोड़े ही कुम्भ का मेला है। नहीं, कुम्भ का मेला कौन–(सा) है? आत्माएँ और परमात्मा अलग रहे बहुकाल, सुन्दर मेला कर दिया जब सद्गुरू मिले दलाल। तो यह है कल्याणकारी आत्माओं और परमात्मा का मेला। इसको कहा जाता है कुम्भ या कॉनफ्लुअन्स। वो देखो क्या करते हैं, कितने लाखों जा करके डूब कर मरते हैं, क्या करते हैं, बड़े दुःखी होते हैं एकदम। यहाँ देखो, तुम कैसे मौज से बैठे हुए हो। इस पढ़ाई में कोई शास्त्र की, वेद की, ग्रंथ की कोई पुस्तक की दरकार है? आई सी एस के लिए या बड़े इम्तिहान के लिए कितनी पुस्तकें हैं! बड़ा मत्था ही किसका खराब हो जाता है। कितनी मेहनत है! यहाँ देखो, कुछ भी नहीं।..... गाया जाता है जो पढ़ा, सब भूलो। बाकी जो तुमने कभी पढ़ा ही नहीं वो सुनो बाप से। जो भी सुनते आते हो हियर नो ईविल, सी नो ईविल, टॉक नो ईविल। तो भला क्या करो, मैं जो कुछ समझाऊँ वो समझो। बाकी तुमको जो भी ये गुरू लोग सुनाते हैं कुछ काम का नहीं है ; क्योंकि यह पतित–पावन की बात है ना। वो ढेंढरों की कॉन्फ्रेन्स है। अभी देखो कॉन्फ्रेस हो रही है। बहुत कॉन्फ्रेस करते हैं। ट्राँ–ट्राँ–ट्राँ । कोई फल ही नहीं निकलता है। बाप बैठ करके समझाते हैं– बच्चे, तुम सब मिल करके.....पीस स्थापन हो; परन्तु यह तो बाप के ऊपर है ना– सभी बच्चों को मुक्ति–जीवनमुक्ति देना। यह तो वर्ल्ड का क्वेश्चन है ना! वर्ल्ड में पीस चाहिए ना! तो वर्ल्ड के फादर का काम है या तुम लोगों काम है, जो इस समय में पतित और फलाने हो ड्रामाअनुसार? क्योंकि ड्रामा है ना। ड्रामा को कहा जाता है प्रीऑर्डेन्ड वर्ल्ड ड्रामा वा गीता के कायदे या कैनन अनुसार। अभी गीता का भगवान कौन सो ही बिचारे नहीं जानते हैं। ये तो जो धर्म (वाले) होते हैं वो जानते हैं कि हमारा धर्म किसने स्थापन किया, हमारा धर्म शास्त्र क्या है। भारत को वो ही पता नहीं कि हमारा धर्म किसने स्थापन किया। वण्डर है !...बाप ने स्थापन किया और बच्चे को इनहेरीटेन्स दिया। उस बाप के बदली में जिसको इनहेरीटेन्स मिला उनका नाम शास्त्र के ऊपर लगा दिया– श्रीकृष्ण भगवानुवाच। शिवभगवानुवाच और फिर कृष्ण ने जो अंतिम जन्म में बैठकर सहज (राज)योग सीखे और फिर से श्रीकृष्ण बनते हैं, उसका नाम डाल दिया। बस, खलास। तो जब एक ही शास्त्र खण्डन हो गया, तो बाकी तो सभी खण्डन हो गए। तो देखो, भागवत–महाभारत....। अभी महाभारत क्या है? युद्ध फलाना। युद्ध के मैदान में घोड़े की

गाड़ी और वहाँ अर्जुन को बैठा दिया। कृष्ण को बैठा दिया रथी। अरे, रथ (पर) रथी सो तो बाप आएगा ना। ये रथ, इसको अश्व भी कहते हैं। इसमें बाप आएगा, सवार होगा या भगवान बैठकर गाड़ी में.... पल्टनें लगी पड़ी हैं। जैसे आजकल पल्टनें दिखलाते हैं ना। .. . अर्जुन को भगवान ने राजयोग (सिखलाया)। बहुत होंगे ना, ढेर होंगे। राजाई स्थापन होती है ना। तो बस, आठ घोड़े की गाड़ी में बैठाय दिया। जैसे पहले वाइसराय और ये सभी यहाँ आठ घोड़े की गाड़ी में बैठते थे। तो गाड़ी बनाय दी। तभी बाप आ करके कहते हैं कि मैं ब्रह्मा द्वारा ; (दिखाते) हैं ना विष्णु की नाभि से ब्रह्मा (निकला)। जो भी ये वेद,ग्रंथ,शास्त्र वगैरह हैं ना इनमें कोई सार नहीं है। देखो, तुम पढ़ते–2 कितने भ्रष्टाचारी बन गए हो। मैं बैठ करके तुमको इन सबका सार समझाता हूँ। गीता किसने गाई? फिर यह भागवत में क्या लिखा है? गालियाँ ही गालियाँ। कृष्ण ने फलाना किया, गोपियों का हरण किया, इतनी शादियाँ की, ये किया, तक्षक सर्प ने डंसा आदि। यह क्या बैठ करके (लिखा है)! इसमें कुछ सार है? पढ़ते आए हुए हो, (इससे) क्या हुआ तुमको? भ्रष्टाचारी बन गए।....कृष्ण के चरित्र कैसे हो सकते हैं? चरित्र की तो कोई दरकार नहीं है। बाप का चरित्र गाया जाता है– हे परमपिता परमात्मा! तुम पतित–पावन हो, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप माना बाप हो, सत् हो यानी ट्रुथ कहने वाले हो, सत्य बताने वाले हो, चैतन्य बीज हो। कोई वो झाड़ का बीज नहीं बोलते हैं। नहीं, चैतन्य हो, ज्ञान का सागर हो। तो सब कुछ आत्मा में है ना। सारी नॉलेज आत्मा में है। तुम्हारे पास में भी आत्मा में धारण होती है ना, जिस संस्कार अनुसार तुम फिर जा करके पढ़ाई पढ़ करके राजा बनते हो। संस्कार उनमें होते हैं ना। बाबा में भी तो ज्ञान का संस्कार है ना। कौन–सा ज्ञान? सृष्टि के आदि,मध्य,अंत का ज्ञान देते हैं। तुम बच्चों को त्रिकालदर्शी बनाते हैं। तीनों कालों का, तीनों लोकों का ज्ञान देते हैं। इसलिए तुमको त्रिकालदर्शी भी कहा जाए; क्योंकि तीनों कालों का, तीनों लोकों का तुमको अभी पूरी नॉलेज है। भई, हम कहाँ से आते हैं? मूलवतन से आते हैं। उसको कहा ही जाता है इनकॉरपोरियल वर्ल्ड। अगर सिर्फ ब्रह्म कह दें, वो तो तत्व है ना। तो तत्व थोड़े ही कोई परमात्मा होता है। ये तो सन्यासी लोगों (को कहते हैं) तत्वज्ञानी। यानी जहाँ हम रहते हैं महतत्व में, उनका उनको ज्ञान है। उनको ही परमात्मा (कह देते हैं)। यह ज्ञान है कि वो परमात्मा है। अहम् ब्रह्म। बाप बैठ करके समझाते हैं कि ड्रामा अनुसार भक्तिमार्ग के गुरूओं की यह शास्त्र की समझानी है, जिनमें कोई सार नहीं है; क्योंकि जन्म–जन्मांतर पढ़ते आए हो–पढ़ते आऐ हो और गिरते आए हो। तो सार ठहरा ना। सार किसमें है? बाप आ करके जब ये नॉलेज सुनाते हैं, जिसका नाम रख दिया है– गीता। कोई तो नाम रखेंगे ना। तो आ करके बच्चों को फिर से सनाथ अर्थात् सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, अहिंसा परमोधर्म, यथा राजा–रानी तथा प्रजा बनाते हैं। तो देखो, यह क्या होता है? राजधानी स्थापन होती है। और कोई भी धर्म स्थापन करने वाले कोई राजधानी नहीं बैठकर स्थापन करते हैं। नहीं, राजधानी यहाँ स्थापन होती है। बच्चों को यहाँ अच्छी तरह से पवित्र बनना है। ऐसे नहीं कि सतयुग में आ करके पवित्र (बनेंगे)। सतयुग में तो होते ही पवित्र हैं ना। बोलते हैं संगमयुग में आता हूँ। सो भी कल्प के संगमयुगे, युगे–2 नहीं। अच्छा, युगे–2 तो भी चार दफा या पाँच दफा। तुम फिर कह देते हो कच्छ अवतार, मच्छ अवतार, वाराह अवतार, भित्तर–ठिक्कर अवतार। ये तो गाली देनी हुई। तब देखो गीत में भी कहते हैं ना– यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। किसने कहा? बाप (ने)। जब मेरी (और) मेरे देवताओं की ग्लानि हो जाती है (तब मैं आता हूँ)। रामचंद्र को कितनी गाली, सीता को कितनी गाली, सबको गाली देते हैं। परमात्मा को सबसे जास्ती गाली दिया सर्वव्यापी कि कुत्ते–बिल्ले में है।....शंकर पार्वती के पिछाड़ी फिदा हुआ, ब्रह्मा सरस्वती के ऊपर फिदा हुआ। देखो, ये गालियाँ हैं ना। बाकी विष्णु के लिए तो कुछ कह ही नहीं सकते हैं; क्योंकि वो तो देवता है ना। तो ब्रह्मा को

गाली दिया गोया विष्णु को गाली दिया; क्योंकि ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा। तो गोया उनको ही गाली दे दिया।...गाली ही देते रहते हैं; परन्तु ये बोलता है ये ड्रामा है। ये बना–बनाया खेल है। सो बाप आ करके समझाते हैं। दूसरा कोई जानते ही नहीं हैं; क्योंकि कहते हैं ना– न रचता, न रचना के आदि,मध्य,अंत को जानते हैं। तो न रचता (यानी) न बाप को जाना तो नास्तिक। फिर नास्तिक माना ही ऑरफन। बाप समझाते हैं कि इस समय में जो भी दुनियां है, जो भी बच्चे हैं, ये सभी हैं ऑरफन्स। ऑरफन लाइक कहो। ऑरफन लाइक क्यों? जब बाप–माँ नहीं होते हैं तो बच्चे लड़ते–झगड़ते हैं। तो कहा जाता है कि तुम्हारा कोई धनी–धोरी है? वो तो हुई हद की बात, यह है बेहद की बात।.....कोई भी नहीं जानते हैं; इसलिए देखो, कितने लड़ते–झगड़ते हैं। बाप इस नॉलेज को जानते हैं ना। अभी आते हैं तुम बच्चों को नॉलेज दे करके फिर से पवित्र बना करके फिर तुमको धण का बनाय देते हैं। फिर नो लड़ाई, नो झगड़ा, नो मारा–मारी। तो भारत के ऊपर यह सारी आखानी कहो, ड्रामा कहो (बना हुआ है)। ड्रामा का अक्षर ही कोई सन्यासी नहीं जानते हैं, नहीं तो अंग्रेजी में अक्षर बड़ा अच्छा है– प्रीऑर्डेन्ड इम्पेरिशेबल वर्ल्ड ड्रामा, फिनिश।...इस समय में जो भी एक्टर्स हैं, जो भी अभी आएँगे भी, थोड़े रहे हैं ना, ये सभी आत्माओं को अविनाशी पार्ट बजाने का मिला हुआ है। देखो, कितनी बड़ी बात ! बाबा ने अच्छी तरह से समझाया है कि शिव, जिसको लिंग कहा जाता है, (वो) कोई लिंग नहीं है, (उसको कहा जाता है) परमपिता परमात्मा। परम आत्मा माना सुप्रीम आत्मा। आत्मा का रूप क्या है? वो तो गाते हैं ना स्टार लाइक। चमकता है भृकुटी के बीच में अजब सितारा, अजब आत्मा। अजब क्यों? वण्डर है (कि) इतनी एक छोटी सी चीज़ में यह साक्षात्कार होता है। स्टार लाइक है। बहुत सन्यासियों वगैरह को भी आत्मा का साक्षात्कार होता है। रामकृष्ण और विवेकानंद के उसमें(जीवनी में) भी लिखा हुआ है कि मुझे बाप से एक स्टार जैसे कि उसमें से निकल करके मेरे में प्रवेश किया। खुश हो गए। ये क्या हुआ, उसका अर्थ तो कुछ भी नहीं। हुआ सो क्या हुआ! तो है स्टार लाइक। वण्डर है ना कि उसमें यह इम्पेरिशेबल पार्ट (भरा है)। ...देखो, कोई भी मनुष्य को लो, जो भी 84 जन्म (लेने वाले हैं), उनके स्टार में तो बहुत भारी (और) सबसे जास्ती पार्ट (भरा है)। बाप कहते हैं मेरी आत्मा में भी.....। देखो, भक्तिमार्ग में मैं तुम्हारी कितनी सर्विस करता हूँ। जो जिस भावना से मेरी या देवताओं की या जो कुछ (भक्ति करते हैं), मैं उनकी शुद्ध कामना पूर्ण करता हूँ। देखो, ऊपर रहते हुए भी उनका कितना पार्ट है। उस समय में तो वण्डरफुल पार्ट है। हम सबको सुखी करके फिर छिपा देते हैं। यह पार्ट कल्प–2 बस बजाते ही रहते हैं। तुम बच्चों का पार्ट बजता ही रहता है। बाकी हाँ, जिनका पार्ट देरी से आता है, वो जास्ती वहाँ रहते हैं। तो जो देरी से आते हैं उनको सुख भी देरी से (मिलता है), वो आत्माएँ भी नंबरवार (आती हैं) ; क्योंकि एक्टिंग है ना। ज़रूर बड़े एक्टर भी होंगे, छोटे होंगे, उनसे छोटे होंगे, सबसे छोटे। तो सुना दिया कि सबसे पहले ते पहले (पार्ट है) बाबा का। पीछे है ब्रह्मा–विष्णु। ब्रह्मा सो विष्णु बनते हैं, विष्णु सो ब्रह्मा बनते हैं। अब यह कोई इसमें(शास्त्रों में) लिखा हुआ थोड़े ही है। शंकर का पार्ट बस बिल्कुल थोड़ा है एकदम। इसलिए शिव–शंकर लिख दिया है; क्योंकि इन दोनों का.... ये ऊँचे हैं बहुत। बस, बाबा तो जन्म ही नहीं लेता है, उनका शरीर नहीं। उनको सूक्ष्मवतन में एक बारी, बस। बच्चे यह भी नहीं जानते हैं कि शिव अलग है। अरे, उनका चित्र ही अलग है। स्टार है या लिंग? सूक्ष्मवतन में उनको शरीर, नाग, सर्प डालते हैं। ये सभी सर्प (आदि) कुछ है नहीं। वहाँ सूक्ष्मवतन में सर्प कहाँ से आया ? या बैल कहाँ से आया, जो शंकर उसके ऊपर सवारी करेगा? ये सब माया के, रावण के गपोड़े हैं। इसको कहा ही जाता है गपोड़े। तो गपोड़े शास्त्र में लगा–लगा करके घोर अंधियारा हो गया है। इसको कहा जाता है घोर अंधियारा। बाप आ करके फिर घोर सोझरा (करते हैं)। देखो, बच्चों को कितना ज्ञान मिला है। सब जान चुके हैं। जो बाबा

में नॉलेज है वो नॉलेज बाबा ज़रूर सब बच्चों को देंगे ना। सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। ये जो गपोड़ा मारते हैं (कि) 84 लाख जन्म। सो भी गपोड़ा भी कोई सीधा होवे। सभी मनुष्य 84 लाख जन्म ? पहले आवे, चाहे पिछाड़ी में आवे, सभी 84 लाख जन्म कैसे ले सकेंगे? कहते हैं यह सब ज्ञान नहीं है, यह अज्ञान है और भक्तिमार्ग है। भक्तिमार्ग माना दुर्गति मार्ग। जब भक्ति करते, गीता पढ़ते, शास्त्र पढ़ते, दुःखी हो करके दुर्गति में पूरे आ जाते हैं तो दुर्गति हो गई ना, तो बाप आ करके फिर सबकी सद्गति (करते हैं)। सबका सद्गति दाता एक राम कह देते हैं, बाबा कह देते हैं। परमात्मा ही कहेंगे। तो अभी सुना अच्छी तरह से ये गीत का अर्थ ? कहते भी हैं, आते हैं जब माया की परछाई हो जाती है और मनुष्य दुःखी होते हैं। बाप आएँगे भी तब ना। तो अभी तुम बच्चे.... पुरुषार्थ करके.....अभी बादशाही स्थापन हो रही है ना। सूर्यवंशी डिनायस्टी, चंद्रवंशी, प्रजा, दास–दासियाँ फलाना। कितना प्लान है ! ड्रामा का प्लान है ना। जो सीट चाहिए सो लो। चाहे यह सूर्यवंशी सीट लो, चाहे यह चंद्रवंशी, चाहे उनके दास–दासियाँ बनो, चाहे राजा बनो। ड्रामा है ना। जो चाहिए सो बाप से लो। जितना पुरुषार्थ करेगा इतना ऊँच पद पाएँगे।.....पुरुषार्थ करना है प्रालब्ध के लिए। किस द्वारा? बेहद के बाप द्वारा बेहद के सुख के लिए।.....भारत बेहद के सुख में थे ना। सूर्यवंशी–चंद्रवंशी घराने में और कोई धर्म ही नहीं था ना। बताते भी हैं वो 16 कला, ये 14 कला। तो पीछे 12, फिर 10, अभी नो कला। भारत में किसी में भी कोई भी कला नहीं है। अगर कहेंगे श्री–2 महादेव,मण्डलेश्वर,शंकराचार्य फलाना। कोई कला नहीं है। इस समय में सभी आयरन एज में हैं। सभी तमोप्रधान, सभी मूत की पैदाइश। इसको ही कहा जाता है भ्रष्टाचार। सतयुग में रावण ही नहीं है तो पीछे मूत कहा से आएगा। बहुत पूछते हैं भला वहाँ बच्चा (कैसे होगा)? अरे, पहले तुम बाप को तो पहचानो। ...अभी बच्चे थोड़े ही पैदा होते हैं, बिच्छू–टिण्डन (होते हैं)। वो गाया हुआ है ना कि शंकर पार्वती के पिछाड़ी फिदा हुआ तो उनका वीर्य हुआ तो उनसे बिच्छू–टिण्डन आदि हुए। शिव है, शंकर है, पार्वती (है) क्या गपोड़ा मारते हैं! यही हैं बच्चे जो पैदा होते हैं। अभी देखो, बर्थ कंट्रोल करते हैं। वण्डर तो देखो! बर्थ कंट्रोल निकाल दिया है, ये थोड़े ही कोई कंट्रोल हो सकेगी। कंट्रोल तो देखो बाबा करते हैं ना। अभी कितने आदमी हैं! कल ये सभी विनाश हो जाएँगे। कल कितने होंगे? किसने कंट्रोल किया?...सतयुग में कितने होंगे? इस समय में कितने हैं? यह बर्थ का कंट्रोल किसने किया? यह तो बाबा का काम है ना। सबको खलास कर दिया। बाकी जिसने मेहनत की वो बाबा से सतयुग में अपना वर्सा लेते हैं। थोड़े ही रहते हैं। अच्छा, अभी बहुत ही सुना। बच्चों को घर में भी जाना होता है। जिनको जल्दी जाना हो टोली ले करके (जाओ)। यह है सत्यनारायण की कथा सच्ची। बाकी झूठी तो जन्म–जन्मांतर सुनते आए हैं। यह सच्ची सत्य नर से नारायण बनने की कथा (है)। बाकी कॉन्फ्रेन्स, तीर्थ आदि क्या–2 करते हैं। आज कितनों ने स्नान किया? उफ! 10 लाख ने स्नान किया। अरे पर, यह तो करते आए हैं ना। जितने मनुष्य बढ़ते जाते हैं उतना ज़रूर जास्ती स्नान करेंगे ना। इस बारी 5 लाख, आगे 3 लाख। अरे पर, मनुष्य सृष्टि बढ़ती जाती है सो तो ज़रूर बढ़ते ही जाएँगे ना। अभी इन सभी खिटपिटों से, धक्कों से (बाप छुड़ाते हैं)। इसको कहा जाता है अंधियारे में। भक्तिमार्ग को कहते हैं अंधियारा मार्ग, ठोकर खाने का मार्ग। ये खेल बना हुआ है दिन और रात, ज्ञान–भक्ति। पीछे है वैराग्य। बाबा ने समझाया है ना कि वैराग्य है दो प्रकार का। एक है हद का वैराग्य– घर–बार छोड़ जाना। यह (है) बेहद का वैराग्य। तुम बच्चे जानते हो ये छी–2 दुनिया है, शरीर भी छी–2 है। देह सहित जो भी कुछ देखते हो इनसे ममत्व मिटाना है; क्योंकि सभी पुरानी है। फिर बाप को याद करो। एकदम लाइट हाउस बनो। एक आँख में अपना स्वीट होम, दूसरी आँख में....मनमनाभव। एक तो मुझे याद करो स्वीट होम को। इसको कहा जाता है मन्मनाभव। पाई–पैसे का अर्थ है। दो अक्षर हैं– अलफ–बे जानना

है। अलफ माना बाबा, बे माना सृष्टि चक्र, रचना। बस इनके आदि,मध्य,अंत को जानना है और चक्रवर्ती राजा बनना है। हमेशा याद रहे एक आँख में स्वीट होम मुक्तिधाम, दूसरी आँख में पढ़ते हो चक्रवर्ती राजा (बनने के लिए वो) जीवनमुक्तिधाम। तो लाइट हाउस हुए ना। तो सबको ये समझाते रहो। तुम बोलते–चालते चैतन्य लाइट हाउस हो। वो तो स्टीमर के लिए है ना। ये भी ऐसे ही है। नैया मेरी पार लगा खिवैया, ऐसे कहते हैं ना। खिवैया भी तो एक होता है ना। ये गुरू लोग खिवैया थोड़े ही हैं, डुबैया है। ये इतने सब जो बहुत हैं अरे, कोई तो डुबायेंगे ना। एक तारेंगे तो कोई डुबाने वाले। तो गुरू की बात हुई ना। तो ये डुबैये और डुबैया की देखो महिमा कितनी है। ये सब गुरू लोग आते हैं। कल कौन आए थे? एक जैनियों का आया था तो बहुत भीड़, बड़ी महिमा। बाप आ करके कहते हैं कि बच्चे, ये साधु लोगों को भूल जाओ। इन्होंने तुमको डुबोया है। कैसे? मेरे से बेमुख किया है। अपने को श्री–3 108 (कहलाते हैं)। अभी श्री–2 108 तो रुद्रमाला है ना। वो तो शिवबाबा की माला है या इन अनेकों की माला है? ठगी,करप्शन,एडल्ट्रेशन पहले नं० में फिर इनमें (है), जिनकी देखो पल्टन निकलती है। चाँदी की कुर्सी पर बैठ जाते हैं। तो बाप बैठ करके समझाते हैं कि यह भभके को मत देखो। बाहर में तो देखने के (लिए) अच्छा है, अंदर में झूठ ही झूठ भरी हुई है। (गॉडेज) ऑफ नॉलेज यह तो जानते हो। तो माता बड़ी हुई ना। माता ही निमित्त (बनी हुई है)।... .बच्चे तो सब हो ना। जगदम्बा कहते हो ना। पुरुष भी कहते हैं, फीमेल भी कहती हैं और अभी प्रैक्टिकल में है। तो माता ही निमित्त बनती है जगदम्बा। उसको ही कहा जाता है गॉडेज ऑफ नॉलेज। ब्रह्मा की बेटी है, (उनको) यह नॉलेज कहाँ से मिली ? ब्रह्मा से मिली। ब्रह्मा को भी किसने दी? शिव परमपिता परमात्मा ने दी। ब्रह्मा द्वारा ब्रह्माकुमार–कुमारियों को यह नॉलेज मिल रही है, जो फिर ब्राह्मण इस यज्ञ के निमित्त बने हैं। ब्राह्मण होते हैं ना। तुम रूहानी, वो जिस्मानी। बाप (आए हैं) स्वर्ग का लायक बनाने। देखो, यह मुसाफिर कैसा अच्छा है! एक मुसाफिर और बाकी इतने सब सजनियाँ हैं। सभी को शृंगारने आते हैं।अभी जो अपने को अच्छी तरह से शृंगारेंगे वो तो अपना ताज–तख्त...। बाबा के पिछाड़ी में चलेंगे। बाकी चलेंगे तो सभी। बाकी बारात है, जो प्रजा बनेगी या मुक्तिधाम में जाकर निवास करेंगी। बड़ी बारात (है) इस साजन की। करोड़ हैं। समझते हो! साजन हैं ना सजनियाँ के ! आए हैं सबको शृंगार करके सबको (ले जाने)। फिर कोई पढ़ते हैं, (कोई नहीं पढ़ते हैं) ; परन्तु जाएँगे सब पिछाड़ी मच्छरों के माफिक। भंभोर को आग लगेगी, सब जाएँगे। इसलिए कहा जाता है साजन और सजनियाँ, बाप और बच्चे। बाप और बच्चे आत्माएँ। साजन और सजनियाँ इस समय में कहते हैं जबकि इसमें आते हैं।

मीठे–2, सिकीलधे बच्चे अब कुम्भक पर आ करके मिले हुए। यह सुहावना संगमयुग है। कॉन्फ्लुअन्स को ये लोग कुम्भ कहते हैं। तो फिर से आ करके फिर से (मिले हैं)। कितने बार मिले होंगे? अनेक बार मिले होंगे, अनेक बार मिलेंगे। देअर इज़ नो इण्ड। नो आदि तो नो अंत। तो ऐसे फिर–2 से मिलने वाले बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग।